शीलवती का चरित्र-चित्रण करें।

शीलवती कथा चरित्र विश्लेषण की दृष्टि से एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कथा है इस कथा का नायक अजीतसेन और नायिका शीलवती है शीलवती परम सुन्दरी के समान रूप एवं लावण्यवती होने पर भी शील चरित्र और सौम्य से युक्त है वह एक कुशल गृहिणी है। अपनी सुव्यवस्था एवं बुद्धिमत्ता से अपने परिवार को स्वर्ग तुल्य बनाना चाहती है

कवि ने स्वयं ही नारी की तुलना नदी के वेगवती धारा के साथ करते हुए चरित्र और शील के महत्व को सर्वोपरी दर्शाया है कहा भी गया है कि जो नारी स्वयं परी बनकर विचरण करती है वह गर्व रूपी वृक्षों को नष्ट करती है। नदियाँ सरिता के जल प्रवाह के समान अपने दोनों कुलों को भ्रष्ट बना देती है जिस प्रकार नदी में अधिजल का प्रदीप होता है और वह जल का प्रकोप जल प्रवाह के रूप में परिणत होकर नदी के दोनों किनारों को तोड़ फोड़ देती है तथा नदी का जल अन्य क्षेत्रों में विभक्त होकर नष्ट हो जाता है उसी प्रकार अधिक विषय वासनाओं के रस से युक्त इस मार्ग में गमन करने वाली नारियाँ पथ भ्रष्ट, कुचरित्रा, कलुषित नारियाँ है जो अपने कुप्रभाव के कारण अपने दोनों कुलों को नदी जल के समान नष्ट भ्रष्ट कर देती है इस प्रकार लेखक ने आरम्भ में ही शील के महत्व को प्रदर्शित किया है

शीलवती अपनी शील साधना के द्वारा पशु-पक्षियों की भाषा को समझने की शक्ति प्राप्त कर लेती है जब अजीतसेन मंत्री बनकर राजा के अन्य मंत्रियों के साथ विदेश चला जाता है। और अपनी पत्नी की शील का प्रशंसा करता है तब शेष मंत्रीगण

उसकी हँसी उड़ाते हुए कहते है नारी और शील विपरीत है।
किन्तु अजीतसेन उसकी प्रशंसा करता है।

चाहे ही प्रज्वलित अग्नि शीतलता को ग्रहण करके, सूर्य पूर्व दिशा को छोड़कर पश्चिम में उगने लगे सुमेरु पर्वत डर से काँपने लगे, समुद्र अपनी मर्यादा को छोड़ दे, लेकिन शीलवती अपनी शील भंग नही कर सकती। ऐसा कहकर शीलवती ने अपने प्रियतम के गले में एक पुष्पमाला पहनाती हुई कहती है कि यदि इस माले का पुष्प मुरझा जाय तो समझना कि शीलवती की शील का खण्डन हो गया। वह पुष्प माला उसके शील के प्रभाव से हमेशा विकसित होती है।

समयातीत एक दिन प्रवास काल में राजा ने अजीतसेन के गले में पड़ी हुई उस सुन्दर पुष्प माला को देखा, अपने परिचारक से उस प्रकार की सुगंधित पुष्प लाने को आदेश दिया। जब चारो तरफ वन-उपवन में परिभ्रमण करके खाली हाथ लौटकर राजा से निवेदन करता है — हे महाराज इस प्रकार के सुन्दर पुष्प उस उपवन में कही नहीं मिल रहा है। ऐसा सुनकर राजा अजित सेन को बुलवाया और उसके पुष्प माला के विषय में पूछताछ किया। राजा सुनकर बहुत आश्चर्य चकित होता है।

वह अजीत सेन की अनुपस्थिति में अपने मंत्रियो के बीच उसकी चर्चा की और मंत्रियो से कहा इस संसार में महिलाओं के शील की रक्षा सम्भव नहीं है। मंत्रियों ने भी उसकी बात की संपुष्टि की। राजा के आदेश के अनुसार मंत्री बारी-बारी से शीलवती का शील भंग करने के लिए प्रस्थान करते है वे शीलवती के पास आना-जाना प्रारम्भ कर देते है, शीलवती बात को समझ जाती है और कहती है कि — मणि को सर्प के फन से उखाड़ना, अथवा प्रज्वलित अग्नि से आग को निकालना।

अथवा सिंह के गर्दन से बाल को निकालना बहुत दुष्कर कार्य है और वह शीलवती अपनी बुद्धि से सभी मंत्रियों को रवे के अन्दर बन्द कर देती है

इधर राजा जब शत्रुओं को पराजित करके लौटा तब शीलवती राजा को अपने घर आमंत्रित करती है और उन मंत्रियों के विषय में परिचय देती है शीलवती की कथा के अन्त में लेखक ने विविध प्रकार के शीलवती का उत्कर्ष दिखलाया है वास्तव में जब परीक्षा का अवसर नहीं आता तब तक सभी नर-नारी अपने को चरित्रवान कहते हैं शीलवती शील की परीक्षा में खरी उतरती है उसके शील के प्रभाव से पुष्प मुरझाएँ नही और युद्ध में उसका पति अपने को सफल पाता है

व्रत संयम तप और शील साधना विषम वासना की तृप्ति द्वारा नहीं होती, तृप्ति का मूल साधन संयम है संयम का पोषक जीवन की यात्रा सिद्धि प्राप्त करता है

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस कथा में लक्ष्य चरित्र का विकास दिखाना है यह एक आदर्शवादी कथा है पर लेखक आशावादी है शीलवती ने अपने शील संयम के द्वारा जो शक्ति प्राप्त की वह नारियों के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है